

प्रश्न-1 :-> (क) दाँतों का निर्माण चतुर कारीगर अर्थात् ईश्वर ने किया है। उन्हीं के कारण हमारे दाँत मजबूत होते हैं। दाँतों की शोभा से सारी शोभा है क्योंकि यदि दाँत नहीं होंगे तो पोपला-सा मुँह निकल आया और चिबुक में नासिका रक्त में प्रेम जाया।

(ख) कवियों ने दाँतों की उपमा हीरा, मोती, भाणिक से दी है। यह उपमा इसलिए दी गई है क्योंकि कवियों के अनुसार दाँत वह अंग है जिसमें पाकशास्त्र के दूहों रस एवं काल्य शास्त्र के नलों रस का आधार है।

(ग) भोजन में दाँतों का बहुत बड़ा योगदान है। दाँतों के कारण ही हम भोजन को चबा सकते हैं अर्थात् भोजन का रस एवं आनंद ले सकते हैं। इसे समझने के लिए किसी वृद्ध के पास जाना इसलिए आवश्यक है क्योंकि वृद्धों के पास दाँत नहीं होते। अतः एक वृद्ध ही दाँतों के महत्त्व के विषय में बता सकता है। वह बता सकता है कि दाँतों के बिना वह भोजन की नहीं कर सकता।

(घ) जब तक दाँत अपने स्थान, अपनी जाति (दंतावली) और अपने काम में दृढ़ हैं, तभी तक दाँतों की प्रतिष्ठा है। मुख के बाहर होते ही दाँतों को एक अपावन, दूषित एवं फेंकने वाली हड्डी समझ लिया जाता है और उन्हें फेंक दिया जाता है। इस व प्रकार दाँतों के साथ मुख से बाहर होते ही भिन्न व्यवहार किया जाता है।

(ङ) शंकराचार्य के कथन और एक अन्य कहावत के द्वारा तब तक हमें यह समझाना चाहता है जब तक दाँत हमारे मुख में होते हैं तब तक उनके साथ अच्छा व्यवहार होता है परन्तु जब दाँत मुख से बाहर हो जाते हैं तब उन्हें अपावन एवं फेंकने वाली हड्डी समझकर फेंक दिया जाता है।

(च) गाल और होठ दाँतों को ढककर रखते हैं अर्थात् वे दाँतों के परदे की तरह कार्य करते हैं। उस परदे से कबि ने यह शिक्षा दी है — कि जिसके परदा न रहा अर्थात् स्वप्नत्व की गौरवदारी न रही, उसकी निर्मल जिदंगी लयार्थ है। अर्थात् जब तक दाँत

4
मरुत के अंदर (पश्चे में) है तभी तक उनकी प्रतिष्ठा है / जब वे बाहर आ जाते हैं तब उनका कोई मूल्य नहीं।

(द) दाँतो की चर्चा में देश का अहित करने वालों का उपलक्ष्य इसाभिरु किया गया है क्योंकि देश का अहित करने वाले लोग और कुछ नहीं बाल्कि पीडा देते हैं एवं देश के भिरु धार्तिक होते हैं। कवि के अनुसार ऐसे लोगों से दूर ही रहना चाहिरु।

(ज) शीर्षक → "दाँत - अमूल्य वरदान"।

प्रश्न-2: → (क) तन-मन अर्पित करने पर भी कुछ और देने की चाह इसाभिरु है क्योंकि धरती माता का हमारे ऊपर बहुत सा त्रहण है।

(ख) मातृभूमि का त्रहण चुकाने के भिरु कवि कहता है

कि शायद वह शाल में सजाकर जब भाल लार अर्थात्
जब भी मातृभूमि को समर्पित करे क' तो उसे स्वीकार
कर लिया जाय ।

(ग) तन और मन मातृभूमि को तभी समर्पित हो सकता है
जब कोई जी-जान से दारुती माता की सेवा करे एवं
अपनी दारुती के लिए बलिदान दे ।

(घ) कविता में गाँव, दुवार, दार एवं आँगन से इसाविस
हामा माँगी जा रही है क्योंकि कवि ने अपना दार
छोड़कर देश का जयगान अधरो पर सजा लिया है
एवं देश का हवज ही केवल कवि के हाथ में है।

(ङ) यहाँ चमन का अर्थ शिर (शीश) से है एवं नीड का
अर्थ शरीर के रक-रक बूँदों से है ।

प्रश्न-5:→ (क) उलटा पिरामिड जैसे शैली में सबसे महत्वपूर्ण सूचना सबसे पहले दी जाती है एवं उसके बाद घटते हुए क्रम में सूचना मिली जाती है।

(ख) वह रिपोर्ट जिसमें ^{3^{वां}} महत्वपूर्ण तथ्यों एवं जानकारियों को उजागर किया जाता है जो सार्वजनिक रूप से पहले उपलब्ध नहीं थे, उसे खोजी रिपोर्ट कहते हैं।

(ग) समाचार मिलने के इह कार्यों के नाम हैं— क्या, कौन, कब, कहाँ, कैसे और क्यों।

(घ) प्रधान संपादक के दो कार्य :-

1. किसी विशेष विषय पर अपनी राय प्रकट करना अर्थात् संपादकीय विवरण।
2. संपादक के नाम जो पत्र आते हैं उनको पढ़ना एवं अवधार में प्रकाशित करना।

(ङ) अंगभेदन विचारपरक लेखन है। इसमें समसामयिक

मुद्दों पर लिखा जाता है एवं दर्शकों तक पहुँचाया जाता है।

प्रश्न-6: → ‘पर्यावरण से जुड़ा हमारा भविष्य’

5

पर्यावरण अर्थात् हमारे आस-पास का वातावरण / पहले पर्यावरण बहुत शुद्ध हुआ करता था / उस शुद्ध वातावरण में सभी लोग स्वस्थ रहते थे / लोगों को बीमारियों का शिकार भी नहीं होना पड़ता था / -चागे-ओर चिड़िया एवं अन्य पक्षी वृक्षों से उड़ते थे एवं चहचाहते थे / -चागे और पेड़-पौधे, जंगल आदि हुआ करते थे /

मशरूत आज के मानव ने पर्यावरण को हानि पहुँचाकर पर्यावरण की परिभाषा ही बदल दी है। आज पर्यावरण शुद्ध न होकर अशुद्ध हो गया है / आज हर जगह पेड़ों का काटा जा रहा है / मानव ने केवल अपनी सुविधा के लिए पेड़ों एवं जंगलों का कटान किया है एवं सभी कुछ नष्ट कर दिया

है। आज हमारा वातावरण शुद्ध नहीं है। मानव ने हर जगह फैक्ट्रियाँ आदि बनाकर दी है। उनके धुएँ से हमारा वातावरण अशुद्ध हो रहा है। लोग गंभीर बीमारियों का शिकार हो रहे हैं। आज लोग यह भूल गए हैं कि पर्यावरण हमारा भविष्य है। लोग यह भी भूल गए हैं कि यदि पर्यावरण को हम नष्ट कर देंगे तो पर्यावरण हमें नष्ट कर देगा।

अतः हमें यह समझना चाहिए कि पर्यावरण से ही हम लोग हैं। यदि पर्यावरण नहीं होगा तो हम भी नहीं होंगे। हमें अपने पर्यावरण को शुद्ध रखना होगा और इसके लिए हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने होंगे क्योंकि पेड़ हवा में से कार्बन-डाई-आक्साइड गैस को हटा देते हैं एवं वायु को शुद्ध करते हैं। यदि ऐसा होता है तभी हमारा भविष्य सुरक्षित रह सकेगा।

प्रश्न-7 → मुझ

तर्पण ।

सप्रसंगा → प्रस्तुत पाँक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक अंतर (भाग-2) में संकलित 'सरोज स्मृति' नामक पाठ से अवतरित हैं जिसके रचयिता विख्यात कवि श्री 'सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'' जी हैं।
 यहाँ कवि ने उस समय का तर्पण किया है जब उनकी पुत्री सरोज की मृत्यु हो जाती है एवं कवि विलकुल अकेले व असहाय हो जाते हैं।

व्याख्या → कवि अपनी पुत्री सरोज के विषय में कहते हैं कि मुझ भाग्यहीन की तू ही एकमात्र सहाय थी। इतने वर्षों बाद जब तक मैंने तेरी स्मृतियों को अपने मन में संजोरा रखा। मेरे जीवन में सदैव दुःख ही रहा है। पहले तो मेरी पत्नी मुझे छोड़कर चली गई और अब तू (पुत्री) मुझे छोड़कर चली गई। कवि कहता है कि मैं आज तो कहूँगा जो मैंने आज तक नहीं कहा। मेरे इसी कर्म पुरे वज्रपात हो रहा है। मैं सदैव हार्म के साथ चलूँगा। कवि कहता है कि

यदि मुझे मेरे धर्म के मार्ग से कोई भी विचलित
 करेगा तो भी मैं अपने धर्म पर अडिगा रहूँगा।
 एवं इसी पथ पर मेरे कार्य सकल होंगे।
 जिस के प्रकार वर्ष पडने से कमल भ्रष्ट हो जाता
 है। परन्तु मैं अपने धर्म पर अडिगा रहूँगा।
 कवि अपनी कन्या के भिरा कहता है कि
 मैंने आज तक जो भी अच्छे कार्य किये हैं। मैं
 उन्हें तुझे समर्पित करता हूँ और तुझे श्रद्धांजलि
 देता हूँ।

- विशेषः →
1. यहाँ अपनी कन्या के प्रति पिता के प्रेम का मनोहारी चित्रण किया गया है।
 2. कवि अपनी पुत्री को उनका सन्तान सहाय्य बताता है।

प्रश्न-8: →

(क) 'वसंत आशा' कविता के कवि 'शुबीर सहाय' जी की मुख्य चिंता यह है कि आज मनुष्य प्रकृति से दूर होता जा रहा है। वह प्रकृति से अपना संबंध तोड़ चुका है। मनुष्य को वसंत के आने का पता भी तब चलता है जब दफतर में बरसत पंचमी की हार्डि होती है एवं कवितारों पढ़ने से भी वसंत के आने का पता चलता है। आज मानव की जिंदगी घर से दफतर एवं दफतर से घर तक ही सीमित हो गई है। वह प्रकृति का अनुभव नहीं करता है। यही कवि की चिंता का विषय है।

3

(ग) 'भरत-राम के प्रेम' में भरत जी कहते हैं कि -
 'मैं जानऊँ निज नाथ सुभाऊ' अर्थात् वे राम जी के स्वभाव को जानते हैं। वे श्री राम की निम्नालिखित विशेषताओं को बताते हैं -
 1. श्री राम शत्रुओं पर भी क्रोध नहीं करते।

2. वे लक्ष्मण में भरत जी को हारा हुआ श्वेत भी खितवा दिया करते थे।
3. श्री राम ने कभी भरत जी का दिल नहीं पहुँचाया।
4. वे किसी को ठेस नहीं पहुँचाते।
5. वे माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हैं।

6
प्रश्न-9 → (श्व) काव्य सौंदर्य :-

1. यहाँ नायिका का अपने पति तक भँवरे श्व काग के द्वारा संदेश पहुँचाने का मनोहारी चित्रण किया गया है।
2. अलंकारों की दृष्टि देखने को मिलती है।
3. नायिका की व्याथा का चित्रण देखने योग्य है।
4. तत्सम शब्दावली का प्रयोग है।
5. सरल, सहज श्व प्रवाहमयी काव्य-भाषा का प्रयोग किया गया है।
6. नायिका अपने पति से विरह की वेदना में है जिसका चित्रण किया गया है। 3

(ग) काव्य सौंदर्य :->

1. शही बनारस शहर का मानवीकरण किया गया है।
2. तत्सम शब्दावली का प्रयोग किया गया है।
3. सरस, सहज एवं प्रवाहमयी काव्य भाषा का प्रयोग किया गया है।
4. काव्य में प्रवाहमयता, संगीतात्मकता का गुण विदुरमान है।
5. बनारस शहर का जल में एक राँग पर खड़ा होना एवं अलक्षित सूर्य को अदृश्य देना। सभी का मनोहारी चित्रण किया गया है।
6. बिंब - विधान विदुरमान है।

3

प्रश्न-10 → नाम में स्नात

अप्रसंगा → प्रसृत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक अंतरा (भाग-2) में संकायित 'कुटज' नामक पाठ से अवतरित हैं। जिसके लेखक 'श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी' जी हैं। यहाँ कुटज के विषय में बताया गया है एवं नाम के विषय में बताया गया है। नाम को बड़ा माना गया है।

व्याख्या → कवि कहता है कि नाम बड़ा होता है। नाम को रूप से बड़ा माना गया है। कवि कहता है कि नाम इसाविरु बड़ा होता है क्योंकि नाम सुनते ही रूप का स्मरण हो आता है। रूप नाम के बिना अधूरा है। नाम तो रूप के अभाव में भी अपना वजूद बनाए रखता है। नाम को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होती है। नाम बड़ा होता है जिसपर समाज का मोहर लगी होती है। यदि हमें किसी का रूप ध्यान नहीं आता तो नाम सुनते ही वह स्मरण हो

आता है। कवि के अनुसार नाम को सामाजिक विमान्यता प्राप्त होती है, नाम इतिहास द्वारा प्रमाणित होता है, जब उसे स्वीकार कर लिया जाता है।

- विशेष :->
1. यहाँ नाम की महिमा का वर्णन कि बहुत ही मनोहारी ढंग से किया गया है।
 2. सरल एवं सहज शब्दों का प्रयोग किया गया है।

प्रश्न-11 :-> (क) जब उस बच्चे के उत्तरों से प्रसन्न होकर एक बूढ़ा व्यक्ति उस बच्चे से कुछ पुरस्कार मांगने के लिए कहता है तो सभी सोचते हैं कि वह बालक कोई पढ़ाई की किताब मांगेगा परन्तु वह बालक लड्डू मांगता है। इस उत्तर पर उस बालक के पिता निराश हो जाते हैं परन्तु कवि खुश हो जाता है। बूढ़ा कहता है कि कम-से-कम एक प्रश्न का उत्तर तो इस बालक ने अपने मन से दिया है। अन्य प्रश्नों के

उत्तर तो उस बालक को रूढ़िवादी गुरु थे / कवि
 कहता है कि यह लड्डू मारना एक जीवन वृक्ष
 है पत्तों की पुकार का मधुर स्वर था न कि
 अलमारी की सिर दुरवाने वाली खड़खड़ाहट ।

4

(ख) 'संबंधिया' के आधार पर हशोबिन के चरित्र की
 बहुत सी विशेषताएँ उभरकर आती हैं। उनमें से
 कुछ विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. हशोबिन से किसी का भी दुश्मन देखा नहीं
 जाता है।
2. जब गाड़ी में वापस आने के लिए उसके पास पैसे
 नहीं होते तो वह जितने पैसे उसके पास थे उन्हीं
 से टिकट खरीदता है। वह आगे बिना टिकट के
 एक स्टेशन भी नहीं जाता अर्थात् वह एक
 ईमानदार व्यक्ति है।
3. वह बड़ी बहुरिया के दुश्मन को शायद करते हुए
 खाना भी नहीं खाता।
4. हशोबिन को बड़ी बहुरिया का दुश्मन देखकर शत
 को नींद भी नहीं आती।

4

प्रश्न-12:→

विष्णु शर्मा
(सन् 1940)

6
जन्म:→

सन् 1940 ई० में प्रसिद्ध कवि विष्णु शर्मा का जन्म, दिंदवाड़ा, मध्य प्रदेश में हुआ था। विश्वियन कॉलेज, इंदौर से उन्होंने अंग्रेजी में एम. ए. किया।
विष्णु शर्मा जी ने कई विद्यालयों में कार्य किया। वे उप सचिव पद पर भी पदासीन रहे। उन्होंने मध्य प्रदेश एवं दिल्ली के महाविद्यालयों में भी कार्य किया। उन्होंने कई विद्यालयों में अपना योगदान दिया। सबसे अधिकतर में उन्होंने जवाहरलाल नेहरू साहित्य में भी संपादक के पद पर कार्य किया।

साहित्यिक परिचय:— विष्णु शर्मा जी का काल्य प्रकाशन

सन् 1956 से शुरू हुआ।
उन्होंने कई काल्य संग्रह का लेखन किया —
पहला — टी. एस. सेलिगट
दूसरा — एक गैर स्वामी समय में

तीसरा - खुद अपनी आरंभ से
 चौथा - सबकी आवाज के पर्दे में
 पांचवा - सिद्धता लकी
 छठा - काल्य और अवाही के दरमियान

उन्हें अपने काल्य संग्रह के लिए कई सम्मानों से सम्मानित किया गया। उन्हें साहित्यकार पुरस्कार, शहीद सहाय पुरस्कार, मैथिलीशरणसिंह पुरस्कार आदि सम्मानों से सम्मानित किया गया।

काल्य भाषा - उनकी काल्य-भाषा सरल एवं अद्वय है। उन्होंने जीवन मूल्यों को अपने काल्य में उभारा है। आज भी वे स्वतंत्र लेखन में लीन हैं।

प्रश्न-13: → "तो हम भी सौ लाख बार बनाइये।" के आधार पर

सूरदास के जीवन से प्राप्त होने वाले मुद्दों की चर्चा निम्नलिखित है -

(क) पुनर्निर्माण :- सूरदास के मन में पुनर्निर्माण की भावना है। उसे विश्वास है कि वह अपना घर दोबारा बनवा पावे में सक्षम होगा।

(ख) आत्मविश्वास :- सूरदास आत्मविश्वास से परिपूर्ण है। उसे विश्वास की कमी नहीं है। वह सोचता है कि वह दोबारा से घर बनवाएगा और बहुत अच्छा बनवाएगा।

(ग) मेहनती स्वभाव :- सूरदास एक मेहनती व्यक्ति है। वह मेहनत करने से कभी पीछे नहीं हटता। वह जानता है कि भैंरो ने उसके पैसे चुराए हैं। परन्तु वह मेहनती स्वभाव का है इसलिए वह भैंरो को कुछ नहीं कहता और मेहनत करने में विश्वास रखता है।

प्रश्न - 14 (क) कवि कहता है कि 'बिसनाथ यह मान ही नहीं
 सकते कि बिसकोहर से अच्छा कोई गाँव ही
 सकता है। उसके कारण निम्नलिखित हैं -

1. बिसकोहर की सुंदरता :- बिसकोहर एक बहुत ही सुंदर
 गाँव है। वहाँ हर जगह फूल खिले रहते हैं।
 पर्यावरण बहुत स्वच्छ एवं सुंदर है। वहाँ पर
 सभी लोग स्वच्छ रहते हैं। चारों ओर का वातावरण
 अच्छा है। चारों ओर फूलों की गंध आती है।

2. बिसकोहर की सुंदर नारी :- एक बार बिसनाथ अपने
 किसी रिश्तेदार के यहाँ
 भ्रमण थे। वहाँ उन्हें एक नारी मिली जो कि बहुत
 ही सुंदर थी। बिसनाथ को वह औरत ऐसी
 लगी जैसे - प्रकृति सजीव नारी बन गई। इसलिये
 बिसनाथ कहते हैं कि बिसकोहर से अच्छा कोई
 गाँव नहीं है।

(ख) पहाड़ों का जीवन विविध संघर्षों का जीवन है। इस कथन के समर्थन में निम्नाभिविक्त कारण स्पष्ट हैं-

1. कठिन चढ़ाई \rightarrow पहाड़ों का जीवन बहुत ही संघर्षमय होता है। वहाँ के लोगों को अपनी दिनचर्या के सामान जुलान के लिए पहाड़ों के रास्तों से गुजरना पड़ता है।
2. ज्यादा बारिश होना और न होना \rightarrow पहाड़ों पर कभी तो ज्यादा बारिश होती है कभी नहीं भी होती है। इससे पानी अभाव में लोगों को बहुत दूर चलकर जाना पड़ता है।
3. भूस्खलन का डर :- पहाड़ों पर कभी-भी भूकंप आ जाता है जिस कारण वहाँ के लोगों के प्राण मुसीबत में आ जाते हैं। अर्थात् हम कह सकते हैं कि पहाड़ों पर जिंदगी बहुत मुश्किल होती है।

प्रश्न - प: → 291/02 बी - ब्लॉक

शाम नगर
दिल्ली

(5)

02, अप्रैल, 2018

संपादक महोदय
टाईम्स ऑफ इंडिया
दिल्ली

विषय: → राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान के लाभ और उसकी सीमाओं की समीक्षा

महोदय,

आपके सुप्रसिद्ध अखबार के माध्यम से मैं स्वच्छता अभियान के लाभों के विषय में अपने विचार प्रकट करना चाहती हूँ जिसके कारण पूरे देश को लाभ हुआ है। मैं यह बताना चाहती हूँ कि जब से

मोदी जी ने स्वच्छता अभियान शुरू किया है तब से सभी जगह का वातावरण स्वच्छ होने लगा है। सभी और खुशहाली का वातावरण है। अब सभी सड़के साफ एवं स्वच्छ दिखाई देती हैं। और इस कारण बीमारियों का खतरा भी कम होता जा रहा है। इसका सबसे बड़ा भाग सभी देशवासियों को हुआ है।

अंत में मैं अपेक्षा करती हूँ कि मेरे विचार आपके समाचार - पत्र में एक अच्छा स्थान प्राप्त करेंगे।

आपकी सदा आभारी रहूँगी।

आपकी आज्ञाकारिणी
 क० श्व० ग।०
 (एक जिम्मेदार नागरिक)

प्रश्न-3:→

(10)

लोकतंत्र और मीडिया

रूपरेखा :-> 1. प्रस्तावना , 2. मीडिया के लोकतंत्र में लाभ
3. मीडिया की हानियाँ , 4. उपसंहार /

मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है। जो केवल लोकतंत्र में धरित होता है वह सब मीडिया के द्वारा ही दर्शकों तक पहुँचता है। लोकतंत्र में चुनाव होने की खबरें, आदि सभी खबरें मीडिया द्वारा ही हम सभी लोग जान पाते हैं। अर्थात् यदि मीडिया न हो तो शायद लोकतंत्र की खबरें, उनमें हो रहे चुनाव, लोकतंत्र में उठ रहे सवाल आदि हम तक न पहुँचें। मीडिया सभी खबरें हम तक न पहुँचती है। लोकतंत्र में जन-हित के लिए किस किस कार्य खबरें उभरे हो रहे धारण, स्व आदि को मीडिया द्वारा ही हम तक पहुँचाया

जाता है।
 मीडिया हमें हर अच्छे-बुरे कार्य जो कि लोकतंत्र में होते हैं की खबर हम तक पहुँचाती है। जब चुनाव होते हैं तो किस पक्ष की क्या खबरियाँ एवं क्या खामियाँ हैं, वह सभी कुछ मीडिया द्वारा ही पता चलता है। हम यह कह सकते हैं कि मीडिया एक लोकतंत्र में एक बहुत महत्वपूर्ण कार्य करती है। मीडिया के बल पर ही लोकतंत्र की दुरी यमी होती है। मीडिया ही लोकतंत्र को बुरे कार्य करने से बचाती है। अर्थात् मीडिया के हर सही लोकतंत्र सभी कार्य सही करने की कोशिश में लगा रहता है। लोकतंत्र को डर होता है कि यदि उसने कोई गलत कार्य किया तो मीडिया द्वारा वह खबर हरको तक अर्थात् सभी लोगों एवं आम जनता तक पहुँच जायेगी। वहाँ पर भी जो कुछ भी हो रहा होता है, मीडिया वही पहुँच जाती है एवं धल-धल की खबर हम तक पहुँचाती है। इस प्रकार मीडिया बहुत महत्वपूर्ण होती है एवं अच्छे कार्य करती

है। अतः मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहना उचित ही है। मीडिया के ही कारण हम लोकतंत्र के विषय में कि वहाँ क्या हो रहा है, सरकार कौन-कौन-सी योजनाएँ बना रही है यह सब मीडिया द्वारा ही पता चलता है।

जहाँ मीडिया के इतने लाभ हैं वहाँ कुछ हानियाँ भी हैं। कहा भी जाया है 'A coin has two sides' अर्थात् एक सिक्के के दो पहलू होते हैं। मीडिया जहाँ इतने अच्छे कार्य करती है वहीं एक अभिशाप की भाँति भी कार्य करती है। मीडिया 'राई का पहाड़' बनाने में सक्षम होती है। मीडिया एक छोटी सी बात को इतना बड़ा-चढ़ाकर दिखाती है कि जिसका बखाना करना संभव ही नहीं है। एक छोटी सी बात एक बड़े मुद्दे के रूप में उठ जाती है और यह सब मीडिया के ही कारण होता है। मीडिया का सबसे भयावक रूप तब सामने आता है जब लोकतंत्र में चुनाव होते हैं। मीडिया जैसे लेकर सब भुगतान के आधार

पर चुनाव में खड़ी किसी एक पार्टी (पक्ष) के समर्थन में हम तक खबरें पहुँचाती है। वह एक पैसा लेकर कार्य करने वाले नोकर की भाँति हो जाता है।

6. 'Media becomes paid' अर्थात् वह भुगतान के आधार पर कार्य करती है। मीडिया इस प्रकार एक अभिशाप की तरह होती है। वह किसी एक पक्ष (पार्टी) के पक्ष में हो जाती है एवं उसी के पक्ष में खबरों का प्रसारण करती है। लोकतंत्र में मीडिया किसी एक पार्टी को मजबूत करती है एवं उसी से संबंधित खबरें भेजती है। जिस पक्ष को मीडिया मजबूत करना चाहती है, वह उस पक्ष की सभी खबरों को हम तक पहुँचाती है एवं उस पक्ष के प्रति हमारे मन के अच्छे विचार भर देती है। इस प्रकार मीडिया का सबसे भयानक, भयावह एवं गंदा रूप चुनावों के समय दिखता है जब वह भुगतान के आधार पर कार्य करने लग जाती है। वह हम तक उस एक पक्ष की विषय में खरी खबरें भी पहुँचाने के स्थान पर उसकी अच्छाइयों को प्रसारित करती है। एक छोटी सी

बात को बढाचढा कर बताना तो मीडिया का गुण
 होता ही है। जहाँ मीडिया छोटी बात को बड़ा बना
 देती है वही वही बड़ी बात को दबा भी देती है
 और यह सब भ्रमताम के आधार पर होता है।
 इस प्रकार मीडिया बुरी भी होती है। किसी
 एक पक्ष के समर्थन में कार्य करना मीडिया
 का काम है। जहाँ वह पैसे लेकर किसी एक
 पक्ष का समर्थन करती है, वही दूसरी ओर
 वह भ्रमताम के आधार पर किसी दूसरे पक्ष को
 गिरा भी देती है अर्थात् उसकी खामियाँ प्रसारित
 करती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि
 मीडिया अच्छी भी होती है एवं बुरी भी
 होती है।

आज मीडिया का स्थान लोकतंत्र में बहुत ज्यादा
 ऊँचा है एवं बढ़ भी गया है। मीडिया को
 किसी एक पक्ष के लिए कार्य नहीं करना
 चाहिए अपितु उसे अपना कार्य ठीक से
 करना चाहिए एवं पूरे देशवासियों को सही-सही

खबर पहुँचानी चाहिए / उसे अपना भाथानक रूप
 नहीं दिखाना चाहिए एवं अपना कार्य दृष्टता से
 एवं इमानदारी के साथ करना चाहिए / यदि ऐसा
 होता है तभी हमारा देखा देखा घोराले से रहित
 होगा एवं तस्की की ओर अग्रसर होगा /

100

Hundred only